University in News on 10 November 2020

I-NEXT PAGE VI

आचार्य नरेंद्र देव ने छात्रों के लिए छोड़ दिया था बंगला

PICS: TUSHAR RAI

शताब्दी वर्ष से पूर्व रोशनी से जगमगाती लखनऊ यूनिवर्सिटी.

i SPECIAL

LUCKNOW (9 Nov, inext): लखनऊ यूनिवर्सिटी शताब्दी वर्ष को बड़े धूमधाम से मनाने की तैयारी कर रहा हैं. यूनिवर्सिटी के सौ वर्ष का इतिहास काफी गौरवशाली रहा है. खासतौर पर यहां के शिक्षकों के द्वारा की गई शिक्षा और उनके त्याग का एक अलग ही स्थान है. यूनिवर्सिटी ने देश के राष्ट्रपति, गवर्नर, मुख्यमंत्री व कई मंत्री तक दिए हैं. वही दूसरी ओर कुछ ऐसे गुरु जी भी दिए है, जिन्होंने यूनिवर्सिटी के साथ ही समाज के पिछड़े लोगों को आगे लाने के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया. इन्हीं में एक थे आचार्य नरेंद्र देव, जिन्होंने समाज के पिछड़ों के उत्थान के लिए यूनिवर्सिटी में एक मिशाल पेश की थी.

तब पिछड़े वर्ग के स्टूडेंट्स के लिए एलयू में नहीं था हॉस्टल

पिछड़े वर्ग के स्टूडेंट्स के रहने के लिए छोड़ दिया था अपना बंगला

खुद गए थे किराए के मकान में

प्रो. दीक्षित बताते हैं कि पिछड़े वर्ग के स्टूडेंट्स के लिए रहने के लिए अपना बंगला देने के बाद आचार्य नरेंद्र देव न्यू हैदराबाद एरिया में एक किराए के मकान में रहने चले गए थे. उनको एलयू में बने दूसरे कई बंगला आवंटन करने की काफी कोशिश की गई पर उन्होंने लेने से मना कर दिया. उनका कहना था गरीब छात्रों के रहने की व्यवस्था पहले होनी चाहिए. वीसी रहने के दौरान उन्होंने वेतन भी नही लिया था. वह हर रोज नियमित रूप से क्लास लेने जाते थे.

खाली किया अपना बंगला

आचार्य नरेंद्र देव साल 1947 से 1951 तक लखनऊ यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर रहे थे. एलयू के पब्लिक एडमिन विभाग के प्रोफेसर व अवध यूनिवर्सिटी फैजाबाद के पूर्व वीसी प्रो. मनोज दीक्षित ने बताया कि आचार्य नरेंद्र देव सन 1947 में देश को आजादी मिलने के बाद पुणे में झंडा रोहण किया था. वहां से चलकर अगले दिन लखनऊ यूनिवर्सिटी आकर उन्होंने वीसी का पद संभाला था. कार्यकाल के दौरान उन्हें रहने के लिए गोमती किनारे स्थित कबूतर कोठी तत्कालिन वीसी आवास आवंटित हुई थी. वे महान समाजसेवी व समाज सुधारक थे. जब उन्हें पता चला कि पिछड़े वर्ग के स्टूडेंट्स के रहने के लिए एलयू में हॉस्टल नही है तो उन्होंने अपना बंगला खाली कर इन स्टूडेंट्स के लिए हॉस्टल बनवाया था.

ग्रांट खर्च की अवधि बढ़ी

lucknow@inext.co.in

LUCKNOW (9 Nov): प्रदेश सरकार ने एलयू को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना के लिए करीब 1.15 करोड़ रुपये ग्रांट दी है. इसे सोमवार को अनुमोदित किया गया है. सरकार ने अनुदान के उपयोग की अवधि भी बढ़ा दी है. धनराशि का उपयोग अब वित्तीय वर्ष 2020-21 में किया जाएगा. जिस कार्य के लिए ग्रांट मंजूर है, उसी पर इसे व्यय किया जाएगा. इंस्टीट्यूट ऑफ हायड्रो कार्बन एनर्जी एंड जियो रिसोर्स, ओएनजीसी, सेंटर फॉर एडवांस स्टडीज, मानव शास्त्र विभाग, समाजशास्त्र विभाग, समाज कार्य विभाग, वाणिज्य विभाग, वनस्पति विज्ञान विभाग, प्राणि विज्ञान विभाग, भौतिक विज्ञान विभाग, जन संचार आदि विभागों ने धनराशि की मांग की थी.

जेप्रदेश सरकार ने एलयू को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना के लिए करीब 1.15 करोड़ रुपये ग्रांट दी है. इसे सोमवार को अनुमोदित कर दिया गया है.

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

मेडल के लिए साक्षात्कार आज

लविवि में शताब्दी समारोह के दौरान होने वाले दीक्षांत समारोह की तैयारियां तेज

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में शताब्दी समारोह के दौरान 21 नवंबर को होने वाले दीक्षांत समारोह की तैयारियां तेज हो गई हैं। कोविड के चलते समारोह में भीड़ काफी कम होगी। समारोह में सिर्फ लविवि द्वारा प्रायोजित पदक ही दिए जाएंगे।

लविवि के सबसे प्रतिष्ठित चांसलर गोल्ड मेडल, चक्रवर्ती गोल्ड मेडल तथा कुलपति पदक के साक्षात्कार मंगलवार को होंगे। चांसलर तथा चक्रवर्ती मेडल के लिए साक्षात्कार सुबह 11:00 बजे से और वाइस चांसलर गोल्ड मेडल (एनसीसी मेडल) का साक्षात्कार दोपहर 3:00 बजे से शुरू होगा। अभ्यर्थियों को विवि के समिति कक्ष प्रशासनिक भवन में उपस्थित होना होगा। लविवि प्रवक्ता डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव ने यह जानकारी दी।

दीक्षांत समारोह 21 नवंबर को होगा। विश्वविद्यालय में स्थापना की रजत जयंती और स्वर्ण जयंती समारोह के दौरान भी दीक्षांत समारोह आयोजित हुए थे। इसे देखते हुए राजभवन ने शताब्दी समारोह के दौरान भी दीक्षांत समारोह आयोजित करने को मंजूरी दी है। के चलते मुख्य समारोह में केवल 15 मेधावियों को ही कुलाधिपति पदक दिए जाएंगे। बाकी मेडल बाद में देंगे। लविवि का परीक्षा विभाग पदक विजेताओं की अंतिम सूची तैयार करने में लगा है। मंगलवार को चांसलर, चक्रवर्ती और कुलपति पदक के साथ समारोह में दिए जाने वाले अन्य पदकों की सूची भी तैयार हो जाएगी।

समारोह में सिर्फ लविवि द्वारा प्रायोजित पदक ही दिए जाएंगे

मालवीय सभागार में होगा दीक्षांत

इस बार दीक्षांत समारोह मालवीय सभागार में होगा। शताब्दी समारोह के दौरान होने वाले बाकी कार्यक्रम कला प्रांगण में होंगे। कला प्रांगण में ओपन एयर थिएटर के हिसाब से मंच तैयार किया जाएगा। इसमें डांस, गायन और नाटक जैसे आयोजन होंगे।

राजभवन भेजा कार्यक्रम का विवरण

दीक्षांत समारोह में दिए जाने वाले पदक के साथ ही अन्य कार्यक्रमों का विवरण राजभवन को भेज दिया गया है। समारोह में राज्यपाल आनंदीबेन पटेल मेधावियों को मेडल देंगी। इसके साथ ही समारोह में कुछ पुस्तकों का विमोचन, डाक टिकट जारी करना, लखनऊ पर सिक्का जारी होना, कॉफी टेबल बुक, डॉक्यूमेंट्री का विमोचन भी प्रस्तावित है।

HINDUSTAN PAGE 6

शताब्दी समारोह में आ सकते हैं सीएम

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष समारोह में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बतौर मुख्य अतिथि शामिल हो सकते हैं। कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय ने सोमवार को इस संबंध में मुख्यमंत्री से मुलाकात की। इसकी अभी तक आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है लेकिन उम्मीद जताई जा रही है कि मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम में शामिल होने की मंजूरी दे दी है। संभावनाएं हैं कि वह दीक्षांत समारोह में राज्यपाल के साथ मौजूद हो सकते हैं।

उधर समारोह को लेकर तैयारियां तेज हो गई हैं। छात्र मेट्रो स्टेशन पर फ्लैश मॉब की भी तैयारी कर रहे हैं।

अगले साल से गूगल प्ले स्टोर व ओएस पर उपलब्ध होगा एलयू का स्लेट एप

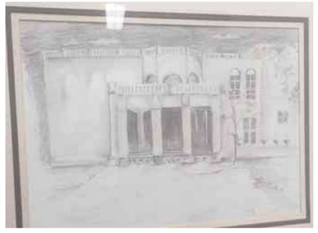

लखनऊ। ऑनलाइन एजुकेशन को लेकर तैयार किये गए एप को हाल ही में भारत सरकार के कॉपीराइट विभाग की तरफ से कॉपीराइट मिलने के बाद लखनऊ विश्वविद्यालय ने अगले सत्र से स्लेट एप को गूगल प्ले स्टोर और ओएस पर उपलब्ध कराने की दिशा में कदम उठाने की सोच रहा है। हालांकि प्ले स्टोर पर एप उपलब्ध कराने से पूर्व विवि एप से जुड़ी सभी विसंगतियों को दूर कर लेना चाह रहा था। विवि के कुलपति प्रो आलोक राय के मुताबिक हम इस सत्र में सभी विषयों की ऑनलाइन क्लासेस लगातार करवाते रहेंगे। स्लेट ऐप्लीकेशन में आने वाली दिकतों को दूर किया जा सके।

PIONEER PAGE 3

आचार्य नरेंद्रदेव ने छात्रों को दे दिया था अपना आवास

एससी-एसटी स्टूडेंट्स के लिए की थी यह व्यवस्था, कुलपति रहते हुए किराए के मकान में रहते थे आचार्य-लविवि के शताब्दी वर्ष को लेकर अब खंगाले जा रहे इतिहास के पन्ने

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के 100वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। ऐसे विवि वास्तुकला एवं पुरातत्व कला से संयोजित विवि की ऐतिहासिक इमारतों के बीच इतिहास के पन्ने खंगाले जाने शुरू हो गए हैं। खासतौर पर यहां के शिक्षकों के द्वारा की गई शिक्षा और उनके त्याग का एक अलग ही स्थान हैं। इनमे एक वर्ष 1947 से 1951 तक विवि के कुलपति रहे आचार्य नरेन्द्रदेव का त्याग और समर्पण विवि के लिए अप्रतिम उदाहरण है। आचार्य नरेंद्र देव साल 1947 से 1951 तक लखनऊ यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर के तौर पर नियुक्त होकर आए थे। लखनऊ यूनिवर्सिटी के पब्लिक एडमिन विभाग के प्रोफेसर व डॉ राम मनोहर लोहिया अवध यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति प्रो मनोज दीक्षित बताते है कि आचार्य नरेंद्र देव सन 1947 में देश को आजादी मिलने के तुरंत बाद पुणे में झंडा रोहण किया था। वहां से चलकर अगले दिन लखनऊ यूनिवर्सिटी आकर कुलपति का पद भार संभाला था। कार्यकाल के दौरान उन्हें रहने के लिए गोमती किनारे स्थित कबूतर कोठी आवंटित हुआ था। वह महान समाजसेवी व समाज सुधारक थे। एक बार जब एससी-एसटी वर्ग के छात्र उनके पास रहने की व्यथा को लेकर पहुंचे तो उन्होंने अपना बंगला स्टूडेंट्स को समर्पित कर दिया। जिसे छात्रावास के तौर पर डेवलप किया गया और उसका नाम हरिजन छात्रावास पड़ गया। कालांतर में जब अन्य हॉस्टल बन गए तो स्टूडेंट्स को वहां पर ट्रांसफर कर दिया गया। वर्तमान में वह छात्रावास डीपीए की बिल्डिंग के रूप में मौजूद है।

खुद चले गए थे किराए के मकान में

प्रो दीक्षित बताते है कि स्टूडेंट्स के लिए रहने के लिए अपना बंगला देने के बाद आचार्य नरेंद्र देव न्यू हैदराबाद एरिया में एक किराए के मकान में चले गए रहने के लिए। उनको एलयू में बने दूसरे कई बंगला आवंटन करने की काफी कोशिश की गई। पर उन्होंने लेने से मना कर दिया। उनका कहना था गरीब छात्रों के रहने की व्यवस्था पहले होनी चाहिए। वह बताते है कि आचार्य जी ने कुलपति रहने के दौरान सैलरी भी नहीं लिया था।

एलयू स्लेट एप से करेगा कमाई

वित्तीय संकट को दूर करने के लिए किए जाएंगे कई काम

lucknow@inext.co.in

LUCKNOW (9 Nov): लखनऊ यूनिवर्सिटी के वीसी प्रो. आलोक कुमार राय ने सोमवार को बताया कि लखनऊ यूनिवर्सिटी वित्तिय संकट से काफी सालों से जूझ रही है. इसे देखते हुए कई अहम कार्य इस शताब्दी वर्ष में किए जाएंगे. जिससे इस वित्तिय संकट को दूर किया जा सके. हम यूनिवर्सिटी द्वारा बनाए गए स्लेट एप को कामर्सलाइज्ड करने की योजना बना रहे हैं. दावा है कि ये एप्लीकेशन आने वाले समय में कई निजी एप्लीकेशन से अच्छा कार्य करेगी.

प्ले स्टोर पर होगा उपलब्ध

बता दें कि स्लेट एप का कॉपी राइट लखनऊ यूनिवर्सिटी को मिल चुका है. वीसी प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि हम इस सत्र में सभी विषयों की ऑनलाइन क्लास करवाते रहेंगे. जिससे स्लेट एप में आने वाली दिक्कतों को इसी सत्र में पूरी तरह दूर किया जा सके. इसके बाद आगामी सत्र में प्ले स्टोर व ओएस पर स्लेट एप उपलब्ध कराने पर तेजी से काम किया जाएगा. इस एप से जो भी पैसा आएगा, उसका उपयोग यूनिवर्सिटी की एकेडमिक क्वॉलिटी को सुधारने में किया जाएगा, जिसका सीधा लाभ स्टूडेंट्स को मिलेगा.

2करोड़ का मिला राजस्व

वीसी ने बताया कि भविष्य में हम ऐसे कई कार्य करेंगे जिससे एलयू को राजस्व मिल सके. इस साल केंद्रीय प्रवेश प्रणाली से हमें करीब 2 करोड़ रुपये राजस्व का लाभ हुआ है.

THE PIONEER PAGE 3

Once upon a time, LU was Badshah Bagh!

PNS ■ LUCKNOW

CENTENNIAL CELEBRATIONS

Lucknow University was Badshah Bagh once upon a time, a building and a garden constructed by the first King of Awadh for his wife and is hence imbued with heritage and history.

Retired professor PK Ghosh from LU's History department, who has carried out research on heritage areas of the university, said the land was purchased by Ghaziuddin Haider who wanted to lay a beautiful garden in the name of his wife Badshah Begum. "However, the structure was completed by his son Nasiruddin Haider because Badshah Begum was not very happy with it. Nasiruddin was a prince at that time," he recalled.

He said that the relics of history which remain at LU now are a few gates and Lal Baradari. "There is also a well which I had discovered at the university. It is a heritage and I will reveal more about it in a presentation which I will be making at the university next week," he said.

He said there was a building located at the place where the registrar's office stands now aud it was called Kabootar Kothi. "There is nothing left of the building now. It was different from the 'kabootar khana' which existed on the other side of the river and was built by Wajid Ali Shah," he said. Litterateur Yogesh Praveen, who is well-versed with the monuments of Lucknow, said Begum Qudsia Mahal used to reside in the same premises and she died there too. "She was one of the favourite wives of the Nawab and when he died, he had willed that he should be buried beside her grave at Karbala Iradatnagar," he said. According to former DG, ASI, Rakesh Tewari, the unique feature of LU building is the main façade which looks the same as it did years back and amplifies the feeling of heritage and history. "The heritage structures at the university are built with lakhori bricks, with which most of the ancient monuments in Lucknow are constructed. The main façade, however, creates the first impact," he said. A senior ASI official said that the heritage areas of LU carry the influence of English and Mughal architecture which was later came to be known as Awadh architecture.

LU GETS ₹1.15-CR GRANT

Lucknow University has received a grant of Rs 1.15 crore for the session 2020-21 from the state government. Spokesperson Durgesh Srivastava said the use of funds has been permitted under certain conditions. "It has to be ensured that the amount is spent in the 2020-21 session and used for works which it is meant for," he said. He said the interest collected on the main amount would have to be deposited in the treasury. He said that the state government has also extended the use of grant given in 2018-19 for establishing a centre of excellence.

RASHTRIYA SAHARA PAGE 5

विश्व एकता वर्तमान की बड़ी जरूरत : केशव

विश्व के मुख्य न्यायाधीशों का अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन समाप्त

लखनऊ (एसएनबी)। सिटी मोन्टेसरी स्कूल द्वारा ऑनलाइन आयोजित विश्व के मुख्य न्यायाधीशों का 21वाँ चार दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन सोमवार को सम्पन्न हो गया। सम्मेलन में मुख्य अतिथि प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने अपने संदेश में कहा कि विश्व एकता आज की सबसे वड़ी आवश्यकता है। एकता से ही सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण संभव है, इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती है। इस अवसर पर इस अवसर पर सम्मेलन के संयोजक व स्कूल के संस्थापक जगदीश गाँधी ने कहा कि सम्मेलन में लगभग सभी मुख्य न्यायाधीशों व कानूनविदों की आम राय रही कि भारतीय संविधान का अनुच्छेद 51(सी) विश्व की समस्याओं का एक मात्र समाधान है। भारतीय संविधान विश्व का अकाला ऐसा संविधान है जो पूरे विश्व को एकता के सूत्र में जोड़ने की वात कहता है।

सम्मेलन में विभिन्न देशों के न्यायविदों, कानूनविदों व अन्य गणमान्य हस्तियों ने एक स्वर से कहा कि वह दिन अव दूर नहीं है जव विश्व की एक सरकार वनेगी और भावी पीढ़ी को स्वच्छ वातावरण, शान्तिपूर्ण विश्व व्यवस्था एवं सुरक्षित भविष्‍य का अधिकार मिलेगा। इससे पहले सम्मेलन में प्रो. वलराज चौहान, वाइसचांसलर, धर्मशास्त्र नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, जवलपुर मध्य प्रदेश, प्रो. आलोक कुमार राय, वाइस चांसलर, लखनऊ विश्वविद्यालय एवं प्रो. सुवीर के. भटनागर, वाइस चांसलर, डा. राम मनोहर लोहिया नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, लखनऊ ने अपने विचारों से विश्व एकता एवं विश्व सरकार का समर्थन किया। इसके अलावा वर्चुअल प्रजेन्टेशन के माध्यम से फिलीपीन्स के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति हिलेरियो डेविड जूनियर को महात्मा गाँधी अवार्ड एवं इजिप्ट के सुप्रीम कॉन्स्टीट्यूशनल कोर्ट के डेप्युटी चीफ जस्टिस न्यायूर्ति आदेल ओमर शेरीफ को होप ऑफ ह्यूमैनिटी अवार्ड से सम्मानित किया गया।

JAGRAN CITY PAGE IV

पढ़ाया कानून और लिखा संविधान

लविवि के प्रो. आरयू सिंह नेपाल की संविधान निर्मात्री सभा के भी थे सदस्य

● ऋषि मिश्र

कानून के विषय में उनका पहला लेख पढ़ कर हार्वर्ड कॉलेज ऑफ लॉ से बुलावा आ गया। उन्होंने वहां पढ़ाई की और देशप्रेम में वापस लखनऊ आ गए। यहां 1938 से 1956 तक पढ़ाते रहे। उनकी कानूनी विद्वता की जानकारी पाकर नेपाल के राजा ने 50 के दशक के अंत में उन्हें अपनी संविधान निर्मात्री सभा में शामिल कर लिया था। उन्होंने नेपाल का संविधान बनाने में भूमिका निभाई।

जौनपुर के जमींदार परिवार में जन्में प्रो. राम उग्रह सिंह (आरयू सिंह) आजीवन हार्वर्ड कॉलेज ऑफ लॉ के स्टूडेंट यूनियन के चेयरमैन भी रहे। लविवि में विधि विभाग के अध्यक्ष रहे प्रो. सिंह भारत में विधि की पढ़ाई के शिल्पी रहे हैं। उन्होंने दिल्ली और बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी में विधि विभाग को स्थापित किया था। लखनऊ विश्वविद्यालय के 100 साल के इतिहास में वे एक अद्भुत नगीना रहे। प्रो. आरयू सिंह ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एमए एलएलबी 1927 में पूरा किया था। फिर वकालत शुरू की।

इन विषयों को किया स्थापित: लविवि के विधि विभाग के अध्यक्ष प्रो. सीपी सिंह ने बताया कि प्रो. आरयू सिंह ने पब्लिक इंटरनेशनल लॉ, कंपनी लॉ, विधि इतिहास, लीगल रेमीडीज, कराधान एवं श्रमिक कानून को विधि संकाय में स्थापित किया था। उन्होंने दो लॉ जर्नल द फेडरलिस्ट और इंडियन लॉ भी शुरू किए। 1957 में उनका निधन हो गया।

विधि विद्यार्थियों के प्रेरणास्रोत: विधि विभाग के डॉ. आशीष श्रीवास्तव ने बताया कि हम प्रो. आरयू सिंह को हमेशा याद करते हैं। वे विधि के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। उनके नाम पर राष्ट्रीय स्तर की मूट कोर्ट प्रतियोगिता विधि विभाग में करवाई जाती है। विश्वविद्यालय जब अपने 100 साल पूरे कर रहा है तो उनका याद करना हमारे लिए अनिवार्य है, क्योंकि वे इस यूनिवर्सिटी के अनमोल रत्न थे।

प्रो. आरयू सिंह। (फाइल फोटो)

दीक्षा समारोह के बाद 194 मेधावियों को मिलेंगे पदक

लखनऊ विश्वविद्यालय के 15 प्रमुख मेधावियों को 21 नवंबर को होने वाले दीक्षा समारोह में मेडल दिए जाएंगे। बाकी 194 प्रायोजित मेडल विभाग स्तर पर दिया जाएंगे। अगले पूरे साल पदक वितरण कार्यक्रम होते रहेंगे। जल्द ही 194 मेधावियों की सूची लविवि की वेबसाइट पर अपलोड कर दी जाएगी। लविवि के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि इस बार कोरोना की वजह से दीक्षा समारोह को संक्षिप्त करना पड़ा है। विवि की प्रो. निशि पांडेय ने बताया कि प्रमुख मेडल के अतिरिक्त बाकी मेडल प्रायोजित होते हैं। इसे लखनऊ विश्वविद्यालय से जुडे लोग अपने किसी प्रियजन की स्मृति में देते हैं।

... तब मिल्क बार में जाने वाली मैं अकेली लड़की थी

● प्रो. निशी पांडेय

प्रो. निशी पांडेय ● जागरण

मैं 22 वर्ष की थी, जब अंग्रेजी साहित्य पढ़ने के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय के ऐतिहासिक प्रांगण में कदम रखे और पहली ही नजर में मुझे इस ज्ञान के मंदिर से प्यार हो गया। विश्वस्तरीय शिक्षकों से पढ़ने और सीखने का मौका मिला। अंग्रेजी विभाग में प्रो. डीडी शर्मा, मोहिनी मांगलिक, राज बिसारिया, सी. विमला राव, एमएस कुशवाहा और अन्य विभागों में प्रो. गोपाल शरण, केसी श्रीवास्तव, भूमित्र देव, सीपी शर्मा जैसे बुद्धिजीवियों ने मेरे जीवन पर ऐसा प्रभाव छोड़ा कि मैं हमेशा सकारात्मक और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित रही। उस समय विश्वविद्यालय के परिसर में छात्र राजनीति के विकराल रूप से मेरा परिचय हुआ- नारेबाजी, तोड़फोड़, लड़कों के गुटों में भिड़ंत, सुतली बम फटना आम बात हो गई थी। इन सब विध्वंसक गतिविधियों के बीच हमारे शिक्षकों द्वारा गरिमापूर्ण तरीके से पठन-पाठन के काम को संपादित करना, हम विद्यार्थियों को ज्ञानार्जन के लिए प्रेरित करता था। उद्दंड छात्रों को प्रेम एवं संवेदनशीलता से सही रास्ते पर लाने के लिए प्रयासरत रहना एक ऐसा सबक था, जो मैंने अनजाने ही ग्रहण और आत्मसात किया। छात्र राजनीति की उठापटक चलती रहती थी, लेकिन हम आम छात्रों के उत्साह में कभी कोई कमी नहीं आती थी। विभाग में शैक्षिक और शोध कार्य में जुटे छात्र सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए स्टडी सर्कल से जुड़ते थे, जो एक साहित्यिक और सांस्कृतिक समूह था। रेजीडेंसी, दिलकुशा गार्डन या किसी छात्र के घर पर मिल बैठकर हम सब छात्र जीवन का आनंद लेते थे। लाल कैंटीन/ मिल्क बार में तब लड़कियां नहीं जाती थीं। मैं अकेली लड़की थी जो नियमित तौर पर लड़कों के साथ वहां बैठती और चर्चाओं में भाग लेती थी। 1987 में मैं वहां शिक्षक बनी। 2005-2008 विश्वविद्यालय के इतिहास में एक महत्वपूर्ण समय था। परिसर में छात्र राजनीति एक नया मोड़ लेने वाली थी। मैं डीन स्टूडेंट वेलफेयर थी और मुझे कड़े निर्णय लेने पड़े। वीसी प्रो. आरपी सिंह का सहयोग हमेशा याद आता है। इसी विकट परिस्थिति में जस्टिस प्रदीपकांत के सहयोग को भी कभी नहीं भूलती, जो विवि के पूर्व छात्र और हाईकोर्ट लखनऊ बेंच के चीफ जस्टिस थे। इन सबके हस्तक्षेप से हम विश्वविद्यालय में अनुशासन स्थापित करने में सफल हुए। आज जीवन के इस पड़ाव पर मुझे विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष का समन्वय करने का अवसर मिला है, यह मेरे लिए विवि की ओर से आशीर्वाद जैसा है। मैं इसे अपने जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि मानती हूं।

[- लेखिका लखनऊ विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग की प्रोफेसर हैं।]

लविवि को 1.15 करोड़ का अनुदान

प्रदेश सरकार ने लखनऊ विश्वविद्यालय को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना के लिए करीब 1.15 करोड़ रुपये ग्रांट (अनुदान) दिया है। इसे सोमवार को अनुमोदित किया गया है। सरकार ने अनुदान के उपयोग की अवधि भी बढ़ा दी है।

धनराशि का उपयोग अब वित्तीय वर्ष 2020-21 में किया जाएगा। जिस कार्य के लिए धनराशि स्वीकृत है, उसी पर इसे व्यय किया जाएगा। इंस्टीट्यूट ऑफ हायड्रो कार्बन एनर्जी एंड जियो रिसोर्स, ओएनजीसी, सेंटर फॉर एडवांस स्टडीज, मानव शास्त्र विभाग, समाजशास्त्र विभाग, समाज कार्य विभाग, वाणिज्य विभाग, वनस्पति विज्ञान विभाग, प्राणि विज्ञान विभाग, भौतिक विज्ञान विभाग, जन संचार आदि विभागों ने धनराशि की मांग की थी।

शोध कार्य और उच्च शिक्षण में मिलेगी मदद

NBT PAGE 6

लखनऊ विश्वविद्यालय | राजस्व बढ़ाने के लिए उठाया जा सकता है कदम

स्लेट ऐप को कमर्शल करने की तैयारी

■ **एनबीटी, लखनऊः** लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने एलयू के 100 से 101 वर्ष तक का रोड मैप तैयार करना शुरू कर दिया है। प्रो.राय ने वताया कि एलयू वित्तीय संकट से काफी सालों से जूझ रहा है। इसलिए कई अहम कार्य इस शताब्दी वर्ष में किए जाएंगे। इसी क्रम में एलयू के स्लेट ऐप को कमर्शल करने की योजना वनाई जा रही है।

एलयू का दावा है कि यह ऐप आने वाले समय में कई निजी ऐप से अच्छा काम करेगी। साथ ही इसके माध्यम से शिक्षण संस्थानों में आसानी से ऑनलाइन क्लासेज चलाई जा सकेंगी। आगामी सत्र में प्ले स्टोर और ओएस पर स्लेट ऐप उपलब्ध करवाने पर काम होगा। इस ऐप से मिलने वाला पैसा एलयू के अकैडमिक सुधार में लगाया जाएगा। हालांकि अभी ये ऐप प्ले स्टोर और ओएस पर कितने पैसे देकर मिलेगा इसका कोई भी मूल्य तय नहीं हुआ है।

केंद्रीय प्रवेश प्रणाली से मिला 2 करोड़ का राजस्व : कुलपति ने बताया कि इस साल केंद्रीय प्रवेश प्रणाली के माध्यम से करीब 2 करोड़ रुपये राजस्व मिला है। इसका कुछ अंश शताब्दी वर्ष समारोह और कुछ अंश अकैडमिक सुधार में लगाया जा रहा है।

सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना के लिए अनुदान उपयोग की अवधि बढ़ी

■ **एनबीटी, लखनऊः** प्रदेश सरकार ने लविवि को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना के लिए अनुदान के उपयोग की अवधि बढ़ा दी है। इसके लिए एलयू को करीब 1.15 करोड़ रुपये की ग्रांट भी दी गई है। यह ग्रांट सोमवार को अनुमोदित हुई है।

इन विभागों ने की थी मांग : इंस्टिट्यूट ऑफ हाइड्रोकार्बन एनर्जी ऐंड जियो रिर्सोस, ओएनजीसी सेंटर फॉर अडवांस स्टडीज, एंथ्रोपॉलजी, सोशियॉलजी, सोशल वर्क, कॉमर्स, बॉटनी, जुलॉजी, फिजिक्स और मासकॉम।

एलयू को दी गई करीब 1.15 करोड़ की ग्रांट

सरकार की शर्तें

- राशि का उपयोग वित्तीय वर्ष 2020-21 में किया जाएगा।
- राशि का उपयोग उसी काम के लिए किया जाएगा जिसके लिए स्वीकृत है।
- स्वीकृत की गई सारी राशि की उपयोगिता प्रमाणपत्र कार्य योजनावार उपलब्ध करवाया जाएगा।

SAMRIDDHI NEWS PAGE 3

एलयू को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के लिए एक करोड़ सत्तावन लाख रुपये का मिला अनुदान

लखनऊ, समृद्धि न्यूज।

उत्तर प्रदेश सरकार ने लखनऊ विश्वविद्यालय को वित्तीय वर्ष 2018-19 के लिए सेण्टर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना हेतु अनुदान के उपयोग की अवधि बजाये जाने के साथ साथ एक करोड़ पंद्रह लाख सत्तावन हजार तीन सौ बयालीस रुपये का अनुदान प्रदान किया है। यह जानकारी लखनऊ विश्वविद्यालय आईपीपीआर निदेशक डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव ने दी।

उन्होंने बताया कि इस अनुदान का उपयोग वित्तीय वर्ष 2020-21 में किये जाने की अनुमति कुछ शर्तों के अधीन किया गया है। जैसे प्रश्नगत धनराशि का उपयोग वित्तीय वर्ष 2020-21 में व्यय किया जाना सुनिश्चित किया जायेगाए प्रश्नगत धनराशि का उपयोग उसी कार्य के लिए किया जायेगा। जिसके लिए धनराशि स्वीकृत की गयी है, धनराशि का उपयोग शासनादेश 9 मार्च 2019, 25 मार्च 2019 और 31 मार्च 2019 में निर्धारित सुसंगत शर्तों के अनुसार सुनिश्चित किया जायेगा, शासनादेश दिनांक 09 मार्च 2019, 25 मार्च 2019 और 31 मार्च 2019 द्वारा स्वीकृत की गयी धनराशि पर अर्जित की गयी ब्याज की धनराशि को राजकोष में जमा किया जाना सुनिश्चित किया जायेगा, स्वीकृत की गयी सम्पूर्ण धनराशि की उपयोगिता प्रमाण पत्र कार्य योजनवार उपलब्ध कराया जायेगा।

आज होगा चांसलर व चक्रवर्ती गोल्ड मेडल के लिए इंटरव्यू

लखनऊ। दीक्षांत समारोह 2020 के लिए चांसलर गोल्ड मेडल एवं चक्रवर्ती गोल्ड मेडल का साक्षात्कार 10 नवंबर को प्रातः 11 बजे से शुरू होगा।

यह जानकारी लखनऊ विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक ने दी। उन्होंने बताया कि वाइस चांसलर गोल्ड मेडल (एनसीसी मेडल) के लिए 10 नवंबर को सायं 3 बजे से साक्षात्कार होना सुनिश्चित है। जिसकी सूचना पूर्व में भी एसएमएसए दूरभाष एवं वेबसाइट के द्वारा दी जा चुकी है। सभी आवेदित अभ्यर्थियों से पुनः अनुरोध है कि उक्त तिथि एवं समय पर विश्वविद्यालय के समिति कक्ष प्रशासनिक भवन में उपस्थित होने हों।